पंचम अध्याय

विष्णु प्रभाकर के एकांकियों में चित्रित आर्थिक और धार्मिक समस्याएँ

पंचम अध्याय

आर्थिक समस्या -

विषय प्रवेश -

"दीर्घकाल से परतंत्र भारतीय समाज में आर्थिक समस्या ने गंभीर रूप धारण कर लिया था । ब्रिटिश साम्राज्य की शोषणकारी आर्थिक नीति के परिणामस्वरूप देश का 'जीवन-रक्त' विदेश चला गया था । उत्पादन और उपभोग के प्राचीन आधार मिट गए थे, और अंग्रेजों द्वारा चलाई गई आर्थिक व्यवस्था विषमता की जनक बन गयी थी ।" [1] अंग्रेज सरकार द्वारा प्रतिपादित कृषि-नीति, औद्यागिक एवं व्यापारिक नीति जमींदारो और पूँजीपतियों को ही समर्थन देती थी । सन् 1947 की एक रात ने जन-सामान्य को स्वतंत्रता का सुखद संदेश दिया और एक स्वप्न जिसमें ब्रिटिश राज्य-सत्ता की दासता से मुक्ति का एहसास तो था ही और पुलिस, सुदखोर और जमींदारो के अमानुषिक अत्याचारों से मुक्त होने की कल्पना । लेकिन स्वतंत्रता की सुखद रात्रि का वह आशा-स्वप्न धराशायी होता दिखाई दिया ।

कहना न होगा अर्थ ही जीवन का नियामक है । "युग का राजनैतिक और सामाजिक घटनाक्रम तात्कालिक आर्थिक प्रतिक्रिया से प्रभावित रहता है, और सामाजिक तथा राजनैतिक विकास वर्गो के संघर्ष के आधार पर होते है।" [2] इसी आर्थिक संघर्ष को रूपायित किया हिंदी नाटक एकांकीकार प्रभाकर ने उनके एकांकी नाटकों में भी आर्थिक समस्या का चित्रण आ गया है । आर्थिक स्थितियाँ संसार को ऊपर उठाती है । भारतीय समाज में इस आर्थिक कमी के कारण छोटी - बड़ी समस्याएँ निर्माण हो रही है । अर्थ के कारण समाज में प्रमुखता गरीबी की समस्या, ऋण की समस्या, मजदूरी की समस्या, बेकारी की समस्या दिखाई देती है ।

एकांकीकार समाज का घटक होने के नाते यह समस्याएँ एकांकियों में चित्रित होती है । साथ ही इन समस्याओं पर उपाय भी बता देता है । जो भविष्य में समाज के काम आ सकते हैं।

5.1 गरीबी की समस्या -

यह समस्या प्राचीन काल से समाज में दिखाई देती है । गरीबी के कारण अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे हैं । खूनी, डाकु, चोर, इन बुराईयों के जन्म का कारण भी गरीबी ही है । दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि प्रथाएँ इसी के कारण बढ़ रही है । पाश्चात्य देश में गरीबी नहीं ऐसा नहीं फिर भी भारतीय समाज में इसका स्वरूप भयावह है । वर्तमान समाज में यह स्वरूप भयानक होता जा रहा है । अलग - अलग मार्ग को अपना कर गरीबी हटाने का प्रयास हो रहा है । यह समाज के लिए घातक साबित हो रहा है । समाज में खून, अवैध व्यवसाय जैसे गुनाह को बढ़ावा मिल रहा है । एकांकीकार ने गरीबी बढ़ने के कई कारण बताए है । साथ ही उपायों की चर्चा भी की है ।

'मीना कहाँ है ?' एकांकी में गरीबी की समस्या की चर्चा की है । एकांकी का प्रमुख पात्र नरेश गरीब आदमी है । गरीबी के कारण वह शादी नहीं करता है। पितृ ऋण से मुक्ति पाने के लिए वह अनाथ मिना का पालन करता है । उसकी गरीबी ही उसे खूनी बनाती है । मीना पड़ोसवाले लड़की के कीमती खिलौने देखकर रोना शुरू कर देती है । नरेश को अपनी परिस्थिति पर और मीना पर बहुत क्रोध आता है । उसको चूप करने के लिए वह उसे मार देता है । उसी में वह मर जाती है । अपने अपराध को कबूल करते हुए वह कहता है - ''सतीश ठीक कहता हैं । मैने उसे यहाँ गाड़ा है, पर मैं उसे मारना नहीं चाहता था । मैं गरीब था, मै उसे खिलौने न दे सका । मैं चाहकर भी उसे प्यार नहीं कर सका । पर ... पर मैं सच कहता हूँ, मेरा यह मतलब नहीं था । थानेदार साहब । मैं उसे मारना नहीं चाहता था । मैं उसे प्यार करता था, ... पर मैं गरीब था ।'' [3] प्रस्तुत चित्रण वर्तमान समाज में अधिक दिखाई देता है । गुनाह करनेवालों में गरीब युवकों का प्रमाण ज्यादा है । जब वे अपने परिस्थिति पर क्रोधित होते है तब गुनाह करते हैं । इस एकांकी में भी गरीबी के कारण नरेश खुनी बनता है। अनाथ मीना मर जाती है । नरेश अंत तक पश्चाताप में अपने आपको खूनी मानता है । बाह्य परस्थितियाँ

नरेश को खूनी साबित कर सकती है । लेकिन अंतरंग में निर्माण परस्थितियाँ भी देखना आवश्यक है । जैसे गरीबी के कारण उनकी मानसिक स्थिति बिघड जाती है । इन स्थितियों के कारण वह गुनाह करता है । वर्तमान समाज में गरीबी के कारण युवक मानसिक रोगी बन रहा है । और वह अवैध काम कर रहा है ।

लेखक ने 'सवेरा' एकांकी में गरीब युवती का चित्रण किया है । उसके घर की परिस्थिति गरीब है । शादी में घर के लोग दहेज दे नहीं सकते । इसलिए उसकी शादी होना भी मुश्कील है । अंत में वह आत्महत्या कर इस प्रश्न को मिटाना चाहती है । गरीब कुटुंब में समाज की नई-नई माँगे पूरी करना कठिन है, देहज के नाम पर मोटर गाडी, फ्लैट आदि माँग रहे हैं । परिणाम गरीब कुटुंब में तो पेट भरना मुष्किल है । इसी कारण ऐसी कुटुंब की लड़कियाँ शादी की उम्र हो कर भी घर में रह रही है । अंत में वह अपनी परिस्थिति पर मजबूर होकर आत्महत्या का मार्ग अपना रही है ।

'माता-पिता' एकांकी में प्रभुदास गाँव में रहनेवाला साधारण गरीब आदमी है । वह अपने बेटे अशोक को खूब पढ़ाना चाहता है । एक दिन शहर में अशोक सांप्रदायिक दंगे में घायल हो जाता है । तब डाक्टर से कहता है "डाक्टर साहब, मै गरीब हूँ, पर अशोक के लिए जो कहोंगे वही करूंगा । जो माँगोगे वही दुंगा । दुनिया यह नहीं कह सकेगी की प्रभुदास बेटे के लिए कुछ करने में झिझा था ।" [4]

अशोक शहर में पढ़ने चला गया है । परंतु सांप्रदायिक दंगे का शिकार हो जाता है । पिता की अपेक्षा है कि अशोक पढ़कर गरीबी दूर करेगा, लेकिन अशोक घायल होकर अंत में मर जाता है । अशोक की घर की परस्थितियाँ जैसे थी वैसे ही रहती है । गरीबी से पीछा छुड़ाने का प्रयास करनेवाले प्रभुदास को अंत में गरीबी में ही रहना पड़ता है । पूरा कुटुंब अशोक के मृत्यु के कारण गरीब ही रहता है । इस चित्रण द्वारा यह कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग नियती का शिकार हो रहा है । जैसे घर के प्रमुख व्यक्ति के पश्चात घर चलाना मुश्किल होता है । उसी तरह गरीब कुटुंब का व्यक्ति मरने के बाद भी गरीब गरीबी में ही रहता है ।

'सूली पर टँगा श्वेत कमल' एकांकी में गरीबी की समस्या आ गयी है । बिन्दु का परिवार गरीब है । अपने पिता की मृत्यु के बाद घर को वह चलाती है । नौकरी करते-करते नीलिमा और प्रतिमा की पढ़ाई पूरी

करती है । वह स्वयं शादी नहीं करती । उनकी पड़ोसन पूनम भी गरीब परिवार की लड़की है । घर खर्च चलाने के लिए मॉडेलिंग करती है । कभी अपना शरीर भी बेचती है । शराब पीती है । बिंदु पूनम से नफरत करती है । राखी पूनम की परिस्थिति बताते हूए कहती है, "देखा है । उसका खूबसूरत चेहरा भी देखा है ।गरीबी और अभावों से भरी बदनुमा जिंदगी की नंगी चट्टानों का सामना करने का साहस खूबसूरत चेहरों में नहीं होता । इसलिए वे कामचोर बहुत जल्दी सुविधा भोगी हो जाते है । संदेह और अविश्वास का वातावरण उन्हे इस ओर धकेलने में और भी सहायक होता है । तब उनके सामने दो ही रास्ते बच रहते हैं - कुण्ठा का या शरीर का सौदा करने का ।"[5] वर्तमान समाज में गरीब लड़कियों को अपनी खूबसूरत जवानी रूपयों के लिए अमीरों को बेचनी पड़ रही है । अमीर सिर्फ खूबसूरत चेहरा देखते है । उसके पीछे की गरीबी नहीं देखते है । गरीबी के कारण पूनम शरीर बेचती है । बिन्दु को नौकरी करनी पड़ती है । नौकरी कायम रखने के लिये मालिक की मर्जी भी संभालनी पड़ती है । अंत तक अविवाहित रहकर घर चलाती है गरीब परिवार के बेटियों का समाज दूरूपयोग करता है, उसको उपयोग की वस्तु समझकर उसके और उसकी गरीबी के साथ खिलवाड़ करता रहता है । यही आज के समाज में दखाई देता है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा अमीरों को ही दोषी ठहराया है । वे अपनी वासनापूर्ति के लिए गरीबी का मजाक उड़ा रहे है । और यह सत्य है ।

इसी तरह 'और वह न जा सकी' एकांकी में शैलेंद्र हिंदी लेखक है । उसकी पत्नी शारदा और बेटा शरत घर में रहते हैं । घर में अनेक वस्तुओं का अभाव रहता है । लेखक घर में बैठे-बैठे पुस्तक लिखते रहते हैं । दूसरा काम-धंदा न होने के कारण रूपयों की तंगी रहती है । घर में कोई भी चीज समय पर नहीं मिलती । घर में हर दिन कोई-न-कोई खाने आते रहते हैं । तब शरी आटा देने के बजाये ताने-मारने लगती है । तब शारदा उसे कहती है, "कौन है ? ओहो, शरी है । क्या और कुछ कहना है, जो यहाँ आयी हो ? मैं कहती हूँ, शरी तुझे ताना मारते शर्म नहीं आयी । आटा नहीं देना था, तो मना कर देती, पर बड़े बोल क्यों बोली ? बता तो, किस दिन तेरा आटा नहीं लौटाया और कौन-कौन सी चीजे रह गयी है, बता ? तब शरी कहती है, देख भाभी, इतना तड़कने भड़कने की जरूरत नहीं है । आटे को मैंने मना नहीं किया । निकाल हुआ रखा है । मैं तो कह रही थी कि भाई साहब को हाथ-पाँव चलाने चाहिए । इस तरी ...।"[6] एकांकीकार ने नजदीक से इस समस्या को देखा

है । वर्तमान जीवन में लेखक को गरीबी से ही सामना करना पड़ रहा है । बार - बार उसके गरीबी के कारण यह ताने सुनने पड़ते है । दिन में आड़ोस-पड़ोस में चीजे लेते शारदा दिन गुजार लेती है ।

'हरिलक्ष्मी' एकांकी में बिपिन और कमल पति-पत्नी का गरीब परिवार है । गाँव के चौधरी से कर्जा लेते है । चौधरी उनके दूर के रिश्तेदार भी है । चौधरी की पत्नी को हरिलक्ष्मी को कमल की परिस्थिति पर दया आती है । एक दिन वह कमल के बेटे निखिल को सोने की जंजीर देती है । तब कमल उनसे कहती है, ''सो मैं नहीं जानती जीजी । पर इतना जरूर जानती हूँ कि माँ होकर मैं लेने नहीं दे सकती । निखिल ! इसे उतारकर अपनी ताई जी को दे दो । जीजी ! हम गरीब हैं, भिखारी नहीं । यह बात नहीं कि कोई कीमती चीज अचानक मिले, तो दोनों हाथ पसार कर लेने दौड़े ।'' [7]

कमल गरीब और स्वाभिमानी है । हरिलक्ष्मी ने दिया तोफा स्वीकार नहीं करती। इसी कारण चौधरी इन परीवार पर अन्याय करते है । उनकी संपत्ति हड़प करते है । कमल जब विधवा होती है । तब पेट भरने के लिए चौधरी के ही घर बर्तन माँजती है । गरीब कुटुंब को भारतीय समाज में ऊपर उठाने का कोई भी प्रयत्न नहीं कर सकता है । अमीर लोग गरीब लोगों को दबोच लेते है यह सत्य है ।

'सब में एक प्राण' एकांकी में निचली जाति के सब लोग गरीब है । गाँव के प्रमुख के विरूद्ध आवाज नहीं उठाते है । गाँव का पण्डित उनको होटल प्रवेश से मना करता है । तब वे चूपचाप घर चले जाते हैं । उनके सामने खाने-पीने का प्रश्न है । रोजी-रोटी के मारे पंचायत के सामने कुछ बोलते भी नहीं । बोलेंगे तो सुबह खेती पर काम नहीं मिलेगा । बच्चों को रोटी नहीं मिलेगी । ऐसा चित्रण वर्तमान में ग्रामीण जीवन में अधिक देखने को मिल रहा है । भारतीय समाज में गरीबी निम्न वर्ग में ही अधिक दिखाई देती है । इसलिए गाँव के विरूद्ध वे लोग आवाज उठाते नहीं है ।

'श्वेत अंधकार' एकांकी में गरीब चपरासी का चित्रण हुआ है । उसकी नौकरी चली गयी है । वह चार महीने से नौकरी की तलाश में दर-दर भटकता है । फिर से नौकरी मिलने के लिए वह धीरेन के सामने कहता है ''मै अपने लिए नहीं कहता, सरकार । मेरा लड़का दसवी में पढ़ रहा है । उसकी पढ़ाई बन्द हो जाएगी

।'' [8] गरीब बनवारी को कोई नौकरी नहीं देते । उसका बेटा पढ़ाई बंद कर देता है । वह रूपयों के लिए चोरी करना शुरू करता है । एक दिन सेठ की बेटी विमला की साथकल उठा कर ले जाता है। गरीबी के कारण मनुष्य में गुनाह करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है । वह छोटी - छोटी चोरी करते - करते अनेक गुनाह में शामिल हो रहा है । यह आधुनिक समाज का चित्र है ।

'दूर और पास' एकांकी में जगन्नाथ धंदे में बार-बार नुकसान उठाने के कारण गरीब हो जाते हैं । उनको बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबंध करना भी कठीन हो जाता है । पत्नी कलावती के साथ झगड़ा होता रहता है । कलावती से तंग आकर जगन्नाथ चोरी करने का विचार करते हैं । वे कहते है कि इस उम्र में चोरी करना ही अब बाकी है । सब कर लिया, रूपयों के लिए क्या करूँ । गरीबी के कारण कोई कर्ज भी नहीं देते है । जगन्नाथ का बेटा अच्छे गुणों से पास होकर भी रूपयों के कारण अच्छे कॉलेज जा नहीं सकता है । गरीब व्यक्ति का समाज में कोई मूल्य नहीं है । ऐसे लोगों को कर्जा देना दूर छोटी मदद भी मिलना असंभव है ।

'धनिया' एकांकी में धनिया और उसका पति होरी गरीब है । होरी खेती में हाल चलाता है । उसे दो बेटियाँ और एक बेटा है । घर में रूपा बेटी के नंगे बदन पर सिर्फ लोंगाही है । होरी काम करने के कारण उम्र के आगे बढ़ा लग रहा है पिचके गाल, सूखा बदन, सिर पर पगड़ी, कंधे पर लाठी लिये खेती पर जाता है । उसकी पत्नी गरीबी से पति का हाल बताते हुए कहती है - ''जाकर सीसे में मुँह देखो । तुम जैसे मर्द साठे पर पाठे नहीं होते । दुध घी अंजन लगाने को तो मिलता नहीं । पाठे होंगे । तुम्हारी दशा देख-देखकर मैं तो और भी सूखी जाती हूँ, कि हे भगवान । यह बुढापा कैसे कटेगा ? किसके द्वार पर भीख माँगगे ? होरी कहता है - नहीं धनिया, सुखने की जरूरत नहीं साठे तक पहूँचने की नौबत नहीं आने पावेगी । पहले ही चल देंगे ।'' [9] आज कल गरीब को अच्छा खाना न मिलने के कारण उनका शरीर दूबला पतला होता जा रहा है । इसका कारण और भी एक है । खेत में उत्पादित धान सावकार ले जाता है । तब भूख के कारण बच्चे तरसते रहते है । होरी और धनिया की चिंता सें गरीबी कम नहीं होती है । सावकार होरी जैसे किसान को अच्छा खाना भी खाने नहीं देते । हर वर्ष ब्याज चूकाते - चूकाते होरी अपना जीवन बीताता है ।

'आँचल और आँसू' में बाईस साल की सुंदर लड़की सुशीला का विवाह अपनी गरीबी के कारण बुढ़े राकेश के साथ करते है । उनकी पहली पत्नी मर चूकी है । उनके दो संतान है । फिर भी परिस्थिति के साथ समझौता कर लेती है । राकेश की उम्र बढ़ने से वह उसे शारीरिक सुख देने में कमजोर पड़ता है । तब भी वह कुछ नहीं कहती । लेकिन डाक्टर द्वारा राकेश का फैमिली प्लॅनींग का ऑपरेशन मालूम हो जाने पर दुःखी होती है । वह कहती है ''मै गरीब की बेटी थी । मेरा सधवा हो जाना ही तुमने जरूरी समझा । जैसे कभी बंगाल में कुलीन परिवार की गरीब लड़कियों के विवाह किसी कुलीन मुर्दे से कर दिये जाते थे । जिससे की वे एक बार माँग में सिंदूर भरकर क्वारापन मिटा सके ।'' [10]

गरीबी का फल सुंदर सुशीला को यह मिलता है, कि जिस आयु में सुंदर सपने दिखने की चाह होती है, उसी आयु में राकेश के सिर्फ बच्चे संभालने का काम उसे करना पड़ता है । दो वक्त का अच्छा खाना और कोई भी काम सौंप दे यह उच्चवर्गियों की पद्धत सुशीला के जीवन को बरबाद करती है । उसके संतान प्राप्ति के सुख पर राकेश अन्याय करता है । तब प्रश्न सामने आ जाता है, क्या राकेश ने गरीब सुशीला के साथ इसलिए विवाह किया था कि सिर्फ दो वक्त का अच्छा खाना देकर वह दो बच्चों की परवरीश करे, और उसकी कामलालसा पूरी करने का यंत्र मिले । आज गरीब युवतियों की परस्थिति यही है, सुशीला जैसे अनेक युवतियाँ विधूर के साथ विवाह कर रही है । एकांकी में राकेश अपने नीजी स्वार्थ के कारण गरीब सुशीला की विवशता का फायदा उठाता है । यह दोनों पात्र समाज के अंतर्गत पाये जानेवाली समस्या के नेतृत्व करते दिखाई देते हैं ।

'संस्कार और भावना' एकांकी में गरीबी में भी आदमी बीना लाचार बने और वह सम्मान के साथ कैसे जीए इसका सुंदर उदाहरण इस एकांकी द्वारा मिलता है । अविनाश बंगाली जाति की स्त्री से विवाह कर देता है । इसलिए घर की संपत्ति के हिस्से से उसे वंचित रहना पड़ता है । वह अपनी पत्नी के साथ उसी स्थिति में दूसरे गाँव रहता है । एक दिन खुद हैजा से बीमार पड़ता है । घर में इलाज के लिए फूट कौड़ी नहीं है । ऐसे समय उसकी पत्नी किसी के सामने हाथ भी नहीं फैलाती है । अविनाश के भाई के पास भी नहीं जाती है । जब अविनाश की पत्नी हैजा से बीमार पड़ती है, बचने की कोई उम्मीद नहीं रहती । तब भी अविनाश किसी के सामने पैसों के लिए हाथ फैलाते नहीं हैं । इलाज वे स्वयं करते है, उसकी स्थिति देखकर माँ दुःखी होती है । भाई

अतुल दुःखी हो जाता है । अविनाश की हिम्मत तूटती नहीं । अतुल अपने भाई के बारे में पत्नी से कहता है - ''कोई लाभ नहीं होगा उम्मा। भैया में एक दोष है, वे जो कहते है, करना जानते है । उनके पास पैसा नहीं , परंतु उसके लिए वे किसी के आगे हाथ नहीं पसारेंगे । वे फौलाद के समान है । जो टूट जाता है, और झुकता नहीं ।'' [11]

अतुल की पत्नी उम्मा अविनाश की परस्थिति देखकर उसे मदद करना चाहती है, तब अविनाश और उसकी पत्नी अस्वीकार करते है । गरीब भी कभी - कभी स्वाभिमान से जीते है इसका सुंदर उदाहरण अनेक एकांकियों में मिलता है ।

'कमल और कैक्टस्' एकांकी में भी इसकी चर्चा है । शुभा और परेश गरीब कुटुंब है । दोनों पति-पत्नी में परिस्थिति के कारण झगड़ा होता है । इसी गरीबी में घर की सदस्य संख्या बढ़ती जा रही है । इस बच्चों को संभालते संभालते परेश थक गया है । इसी परिस्थिति में सुधार करने के लिए परेश की बेटी प्रायमरी स्कुल में नौकरी करती है । ट्यूशन चलाती है । दरसल बेटी की आयु पढ़ने की है, फिर भी गरीबी की कारण कम उम्र में हालात को समझकर काम करते हैं । परेश की घर की स्थिति इतनी कमजोर है कि पत्नी की सहेली पहली बार घर आनेवाली है । तब उसके लिए मीठे फल का प्रबंध करना भी मुश्किल हो जाता है । ऑफीस में उसे कोई कर्जा देने के लिए तैयार नहीं हैं । ऐसे स्थिति में बेटे अजित की पढ़ाई, रितू, मनोज, राजू का खर्चा चलाते - चलाते परेश थक जाता है लेकिन गरीबी से उपर नहीं आ जाते है ।

उपर्युक्त एकांकी के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि गरीब लोग कितना भी कष्ट करके अपनी स्थिति सुधारने का प्रयत्न करें फिर भी समाज के अमीर लोग उन्हें आगे जाने नहीं देगें । कभी - कभी यही लोग गरीबी से तंग आकर चोरी, खून, करने का साहस कर रहें हैं। पूरी स्थिति को बदलने का प्रयास गरीब आदमी कर सकता है । लेकिन बदल भी नहीं सकता । भारतीय समाज में यह समस्या अधिकतर निम्न वर्ग में दिखाई देती है । इसका कारण है, योग्य शिक्षा का अभाव, पैतृक संपत्ति का अभाव । इसलिए इन लोगों की परिस्थिति सुधार नही रही है।

5.2 ऋण की समस्या -

सामान्य परिवार में अर्थ की कमी के कारण गाँव के साहुकार, मित्र आदि से ऋण लिए जाते हैं। समय पर सुद न देने के कारण इस आर्थिक व्यवहार में झगड़ा निर्माण होता है। कभी-कबार अदालत तक यह झगड़ा चला गया है । साहूकार अपनी रूपयों की ताकत पर गरीबों का शोषण कर रहा है। वर्तमान परिस्थिति में शहर में भी यह समस्या अधिक बढ़ रही है। छोट - छोटे मजदूर यह समस्या से त्रस्त है। ग्रामीण भागों में भी इस समस्या गरीबों में बढ़ रही है। साहूकार गरीबों पर कैसे अत्याचार करते है इसका चित्रण करके इस समस्या पर उपाय भी बताए हैं। एकांकीकार ने इस समस्या द्वारा निर्माण होनेवाली अनेक समस्यों का चित्रण प्रस्तुत एकांकियों में किया है।

'मुरब्बी' एकांकी में यह समस्या दिखाई देती है। मुनव्वर गरीब किसान है। उनके मित्र मुरब्बी। व्यापारी है। मुरब्बी का बेटा राधे और पोता देवी अलग रूप से व्यापार करते है, वे किसानों को कर्जा भी देते है। मुनव्वर ने इन लोगों से खेती के लिए तीन सौ रूपये कर्जा लिया था। अगले समय फसल खराब रहने से कर्ज चूकाया नहीं जाता है। तब वे दोनों मुनव्वर की खेती सूद के रूप में लेने के लिए उनके विरूद्ध अदालत जाने की तैयारी करते है। जब मुरब्बी को इस बात का पता चलता है, तब बैचेन होकर अपनी बहू प्रभा से कहते है - "राधे क्या करेगा, बात यह है कि मुनव्वर ने उससे तीन सौ रूपये उधार लिये थे। बेचारा गरीब किसान है, नहीं चूका पाया। वैसे उसे लेने नहीं चाहिए थे, ले लिये, तो चूकाने चाहिये थे, पर फसल खराब हो गयी लौटा नहीं सका। राधे अब उसकी नालिश करने को कहता है।" [14] मुनव्वर के विरूद्ध कर्ज न चूकाने के कारण राधे और देवी अदालत जाने की तैयारी करते है, लेकिन वक्त पर मुरब्बी अपनी दोस्ती की खातिर उनके कर्ज का रूपया उन दोनों को दे देता है। एकांकीकार ने इस समस्या के चित्रण द्वारा भारतीय किसान की व्यथा चित्रित की है। हर एक किसान को 'मुरब्बी' जैसा दिलवाला व्यापारी मित्र नहीं मिल सकता है। वर्तमान परिस्थिति में किसान खेती के लिए साहूकार से कर्जा ले रहा है। वह पढ़ा लिखा न होने के कारण उसका सूद बढ़ता ही जाता है। इसी कारण कर्ज के सूद में ही खेती घर निलाम हो रही है।

'धनिया' एकांकी में भी यह समस्या दिखाई देती है । किसान के पास संपत्ति नहीं होती । उसकी इच्छा रहती है कि घर में चार पाँच गाय, भैस हो । वह उसे ही अपनी संपत्ति मानता है । ऐसा ही गरीब किसान होरी है । रायसाहब गाँव के जमींदार है, और झीगुरीसिंह साहूकार है । ये दोनों किसानों को कर्जा देते हैं । होरी का मित्र भोला उसे गाय देता है । तब दोनों साहूकारों को लगता है कि होरी के पास बहुत रूपया आ गया है । वे अपना कर्जा माँगने लगते हैं, जब होरी नहीं देता है, तब उसे खेती में जाने नहीं देते । होरी को इस बात की चिंता लगती है । वह अपनी पत्नी धनिया से कहता है - ''राय साहब को यह क्या हुआ ? और कभी तो इतनी कड़ाई नहीं होती थी । कहते है, जब तक बाकी न चुका जायेगी किसी को खेत में हल न ले जाने दिया जायेगा ।'' [15] होरी के मन में आता है कि गाय के कारण ही साहूकार नाराज हो गये है, गाय को बेच दे । लेकिन डर लगता है इतने वर्षो का स्वप्न चकनाचूर हो जायेगा । इसी चिंता में दिशाहीन होकर कहता है - ''क्या करू ? धनिया, कुछ समझ में नहीं आता । इधर गिरूँ तो कुआँ, उधर गिरूँ तो खाई । गाय न दूँ तो खेती न होगी, और राय साहब की बाकी चुकाऊँ तो गाय जाती हैं ।'' [16]

भारतीय किसान कि वर्तमान स्थिति ऐसी ही है । साहूकार किसान को ऊपर आने नहीं देते है । अपने सुद में ही डुबा कर किसान को मार देते है । दिन-ब-दिन किसान और मजदूरों की स्थिति दयनीय हो री है ।

'हरिलक्ष्मी' एकांकी में गाँव के लोगों को कर्जा देनेवाला शिवचरण चौधरी साहूकार लोगों के साथ किस तरह पेश आता है, यह दिखाया है । बिपिन नाम के साधारण व्यक्ति उनसे कर्जा लेता है । साहूकार की पत्नी हरिलक्ष्मी के साथ झगड़ा करती है । तब चौधरी क्रोध में आकर उनसे कहता है - ''हमारे पास दबी-छिपी बात नहीं । जो कहूंगा सो साफ-साफ कह दूँगा । ब्याह में जो पाँच सौ रूपये उधार लिये थे, उसके ब्याज असल मिलाकर सात सौ हो गये । उनका भी कुछ खयाल है ? गरीब है, एक किनारे पड़ता है, पड़ा रहे । अरे मैं कहूँ तो कान पकड़कर निकाल बाहर कर सकता हूँ । जो दासी के लायक नहीं, वह मेरी स्त्री के सामने घमण्ड दिखलाती है ।'' [17]

चौधरी की भाषा घमंडी है । वह जिस तरह बोलता है वही कर देता है । गरीब बिपिन के विरूद्ध अदालत में जाकर बिपिन का घर, खेती सूद के रूप में लेता है । वर्तमान परिस्थिति में कर्जा देते समय साहूकार खेती, घर अपने नाम लिखकर लेते है । तभी कर्जा दिया जाता है, आज यह समस्या छोटे-छोटे मजदूर, किसानों में अधिक दिखाई देती है । जो कर्जा वापस करने में असमर्थ होते है, उनका घर निलाम हो रहा है । पुंजीपतियों का स्वराज्य बढ़ रहा है । एकांकीकार ने इस समस्या का चित्रण बड़ी खूबी से किया है ।

मजदूरी की समस्या -

'श्वेत अंधकार' एकांकी में मजदूरी की समस्या दिखाई देती है । धीरेन अपने फर्म से बनवारी चपरासी को मजदूरी के कारण निकाल देता है । तब वह सब के पीछे नौकरी के लिए पड़ता है । जब वह तीसरी बार धीरेन को मिलने आता है । तब सेठ को देखकर नौकरी माँगता हे । सेठ जेब से दो रूपये निकालकर देते हुए उसे भगाते है । तब सेठ धीरेन बाबू से कहते है - "अच्छा क्या, बेटा, हम तो हैं ही इसलिए । दान और दया तो असल में गलत शब्द है । हम तो ट्रस्टी है । इन्ही के लिए कमाते हैं, पर बेटा इन्हे अधिक धन नहीं देना चाहिए । अधिक धन से गरीब बिगड़ जाते है । बिगड़ने के लिए हम ही काफी है । यह विष हर कोई नहीं पी सकता । मै सच कहता हूँ बेटा । धन विष है, विष .... ।" [18] सेठ अमीर है । गरीब बनवारी को देखकर दुःखी हो जाते है । लेकिन उनकी मानसिकता ऊपर्युक्त विवेचन से सामने आती है । मजदूर को नौकरी देना चाहते है । लेकिन अधिक मुनाफा कमाना चाहते है ओर मजदूरी न देकर गरीब को गरीब रखना चाहते है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता हैं कि आज समाज में यह समस्या अधिक बढ़ रही है । छोटे-छोटे कारखानों के मजदूर साहूकार से कर्जा ले रहे है । कर्ज पर प्रतिशत के रूप में सूद भी वे दे रहे हैं । जब सुद समेत रूपया नहीं लौटा सकते तब यही साहूकार अपने गुंड आदमी द्वारा उनको मार देते है, और खेती, घर निलाम कर देते है । कभी-कभी इसमें परिवार का कर्ता मर जाता है । तब बाल बच्चे सब अनाथ हो जाते है । वर्तमान स्थिति में गाँव के साथ शहर में यह धंदा अधिक लोग कर रहे है । इसके कारण

पुंजीपतियों का अधिराज्य समाज पर बढ़ रहा है । सुद की बढ़ती पद्धतियों से एकांकीकार ने भारतीय समाज को सतर्क होने का इशारा दिया है ।

5.3 बेकारी की समस्या -

देश में बढ़ती आबादी के कारण लोगों को नया काम मिलना मुश्कील हो रहा है । भौतिक साधनों के उपयोग से कारखानों में काम करने के लिए आदमी की जरूरत नहीं रही है । पढ़े-लिखे लोग बेकार हो गये है । इसमें जादा नवयुवक है । बेकारी के कारण आज युवक गैर मार्ग अपना रहें है । उनके सामने नैतिक मूल्य शिक्षा का प्रभाव कम दिखाई दे रहा हैं । जैसे - जैसे बेकारी बढ़ती जा रही है । वैसे युवक नौकरी के लिए अर्जिया लिखते-लिखते मायुस होते जा रहे है । वर्तमान समाज में यह बहुत बढ़ी समस्या समाज के सामने है । इसका संबंध नौकरी, बेपार और अर्थ से है । एकांकीकार ने इसका चित्रण करके इस पर उपाय भी बताये हैं, जो भविष्य में समाज के लिए उपयुक्त है ।

'टूटते-परिवेश' एकांकी में नवयुवक विवेक की स्थिति इसी तरह है । वह शिक्षित होकर भी बेकार हैं । वह अपने भाई दीपक को अर्जी लिखकर देता है, स्वयं कि स्थिति बताते हुए कहता हैं ''मुझमें यदि कुछ प्रतिमा हैं, तो बस अर्जियाँ लिखने कि, आज का युवक अर्जियाँ लिखते-लिखते मशीन बन गया है । (फिर तेज होकर) लेकिन मैं नहीं बनुंगा मशीन । मैं नहीं लिखुंगा अर्जियाँ ।'' [12]

एकांकीकार को बेकार नवयुवक की मानसिकता का गहरा अध्ययन है । दीपक वर्तमान में बेकार युवकों का प्रतिनिधित्व करता है । आज कल यही बेकार युवक नौकरी के लिए घुम रहे है । सिर्फ अर्जियाँ लिखने के मशीन की तरह उनकी अवस्था हो गई है । जब अंत में नौकरी नहीं मिलती तब यही युवक गैरमार्ग अपनाने की कोशिश करते हैं।

'कितना गहरा कितना सतही' एकांकी में भी इसकी चर्चा है । उच्च शिक्षित होने पर भी नौकरी मिलेगी, इसका भरोसा कम है । व्यावसायिक शिक्षा से नौकरी की उम्मीद कम नजर आ रही है । ऐसी स्थिति में

आज का युवक क्या कर सकता है । जिसकी शादी हो गयी है, बाल बच्चे है, उसकी अवस्था तो अत्यंत नाजूक हो जाती है । सामने अंधेरा नजर आने लगता है । नौकरी नहीं तो बाल बच्चे भुखे मर जायेंगे, इस विचार से वे मृत्यु का मार्ग अपनाते है । प्राध्यापक श्याम अपने बेकार उच्च शिक्षित मित्र के बारे में युधिष्ठिर, मधुकर, संदीप, हेमंत को बताते हुए और मित्र के पत्नी को निर्देशित करते कहते हैं - "इन बहन के पति मेरे मित्र है । फर्स्ट क्लास केमिकल इंजीनियर, तीन साल से बेकार है । (धीरे से) एक बार तो आत्महत्या तक करने को तैयार हो गये थे ।" [13]

प्राध्यापक श्याम ने बताये उदाहरण आज के वर्तमान समाज में अधिक है । बेकारी से तंग व्यक्ति कुछ भी करने को मजबूर होता है । इसलिए युधिष्ठिर, मधुकर, संदीप, हेमंत कॉलेज के बेकार नवयुवक शहर में दंगाफसाद करते है । और कॉलेज व्यवस्था को नष्ट करने के प्रयास में असफल हो जाते है । बेकारों की मानसिकता आज बदल रही है । उच्च शिक्षित होकर भी वे पागलों जैसे बर्ताव कर रहे हैं । इस सभी के पीछे हमारी शिक्षा प्रणाली है।

'प्रकाश और परछाई' एकांकी में हरिश बेकार नवयुवक है । नौकरी न मिलने के कारण कॉलेज के प्रश्नपत्र चराकर बेचता है, और पैसे कमाने लगता है । दो-चार बार जेल भी जाना पड़ता है । अंत में अपने जिंदगी से तंग आकर गैर कृत्य करना छोड़ने का निश्चय करता है । दूसरे शहर में नाम बदलकर रहने लगता है, तब सुधा नामक लड़की से उनके प्रेम संबंध निर्माण होते है । हरिश उसे दिल से प्रेम करने लगता है । वह सुधा के घर जाकर पिछली जिंदगी के बारे में बताता है । तब सुधा के चाचा उसे घर से निकाल देते है । स्वयं सुधा उसके साथ शादी न करने का फैसला करती है । अंत में हरिश वह शहर छोड़कर चला जाता है । हरिश जैसी बेकार कि अवस्था आज के नवयुवकों की हो रही है । यही बेकार युवक न शादी करते है और न लड़कियाँ उन्हें पसंद करती हैं । बिना नौकरी के कारण शादी से वंचित रहते हैं ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि बेकारी के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण होती जा रही है । संसार चलाने के लिए रूपयों की जरूरत है। रूपये नौकरी या बेपार करने से

मिलता हैं, जब नौकरी नहीं मिलती तो आदमी गैर कृत्य करते समय पीछे नहीं देखता । आज की युवा पीढ़ी के सामने यह बहुत बड़ी समस्या है, इसका निराकरण एक दूसरे की सहायता से ही कर सकते हैं । साथ ही भारत सरकार का भी हक है कि वह बेकारों की उपेक्षा न करें । सरकार बैंको द्वारा कर्जा देने की सुविधा करके शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा, तंत्र विज्ञान, संगणक शिक्षा आदि की शुरूआत करे ताकि भविष्य में नवयुवक नौकरी से वंचित न रहे ।

निष्कर्ष -

मनुष्य प्राचीन काल से प्रयत्नशील रहा है । उसे हर समय सफलता असफलता का सामना करना पड़ा है । हर युग में अलग-अलग समस्याएँ निर्माण हो रही है ।

अर्थ मनुष्य का केंद्र बिन्दु है । अर्थ पर समाज चलता है । लेकिन आज कल अर्थ पर मनुष्य की प्रतिष्ठा निर्भर हो गयी है । इसे बदलना चाहिए । मनुष्य एक दूसरे की सहायता द्वारा यह बदल सकता है । नहीं तो समाज में गरीबी, बेकारी, मजदूरी जैसी समस्याँ अधिक बढ़ेगी । बेकारी की समस्या बढ़ने के पीछे हमारी लोकसंख्या एक कारण है । साथ ही साथ यह भी कहा जा सकता है कि इसे जब तक हम नियंत्रित नहीं कर सकते तब तक यह समस्या बढ़ती ही जायेगी । दूसरी बात यह है कि युवक युवतियों को पहले से ही व्यावसायिक शिक्षा के साथ आधुनिक शिक्षा का अभ्यासक्रम में प्रबंध करना जरूरी है । तब व्यावसायिकता अधिक बढ़ेगी । तब बेकारी कम हो सकती है ।

ऋण की समस्या के पीछे हमारी गरीबी है । फिर भी जो साहुकार सुद लेन-देन का काम करता है । उसे कानून द्वारा कागज पत्र लिखकर देना या लेना अनिवार्य करना चाहिए । तब इसमें लागों को फँसाया नहीं जा सकता है इससे पुंजीपतियों के साम्राज्य की सीमा को मर्यादीत किया जा सकता है ।

धार्मिक समस्या -

विषय प्रवेश -

धर्म के बारे में राधाकृष्णन ने कहा है, "जब तक मनुष्य पर धर्म का प्रभाव रहा, समाज में अशिक्षा और अंधविश्वासों के रहते हुए भी, आज की अपेक्षा अधिक शांति और सद्भावना थी । लेकिन जो ज्ञान की वृद्धि हुई धर्म का अनादर बढ़ा । समाज में अशांति की वृद्धि होती गयी ।" [19] याने धर्म को अधिक महत्त्व मिलने कारण समाज में अनेक समस्याएँ निर्माण हो रही है ।

क्रोसे ने धर्म को पौराणिक अंधविश्वास बताया है, तो लेनिन धर्म को पतनशील समाज का नशा बताते है । सभी का कहने का तात्पर्य यह है, धर्म ने समाज में संकट पैदा किये है । भारतीय समाज संवेदनशील है । धर्म के नाम पर अनेक युद्ध खेले गए है । धर्म के नाम पर अनेक बार सत्तांतर हो गए है । हिंदुस्तान का बँटवार, जातीयता, धार्मिक न्याय, स्वतंत्रता आदि समस्या धर्म के कारण ही निर्माण हो गयी है । प्रभाकरजी ने अपनी एकांकियो में इस समस्या की चर्चा अलग रूप में की है । इससे अलग रहकर वैज्ञानिक दृष्टि से देखने के लिए कहा है । साथ ही इन समस्या पर उपाय भी बता दिए है । जो समाज के सामने आदर्श निर्माण करते हैं । उनकी एकांकियों में धार्मिक समस्या का चित्रण कम मिलता है । लेकिन जो चित्रण मिलता है वह प्रभावी है ।

5.4 धार्मिक संघर्ष की समस्या -

भारतीय समाज में धर्म और जात को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाने का कई बार प्रयत्न किया गया है । हिंदू-मुसलमान दंगा इस बात की ग़वाह है । धर्म के नाम पर अनेक संघर्ष हो गये है । इतिहास में इसका लिखित वर्णन मिलता है । वर्तमान समाज में धर्म के नाम पर संघर्ष हो रहे हैं । कई दिन पहले ख्रिश्चनों का हत्याकांड इस बात का सबूत है । एकांकीकार ने भी अपनी एकांकियों में इसकी चर्चा की है ।

'समंदर' एकांकी में यह समस्या आ गयी है । हिंदू और सिक्ख में इस कारण सांप्रदायिक दंगे शुरू होते हैं । सिक्ख अपना श्रेष्ठत्व सिद्ध करना चाहते है, तो हिंदू अपना श्रेष्ठत्व । कीर्ति सिक्ख समाज की लड़की है । उस पर हिंदू नवयुवक बलात्कार करते हैं । और उसके पिता और भाई की हत्या कर देते है । एकांकीकार ने इसके चित्रण द्वारा समाज में चल रहे छुपे संघर्ष का दर्शन कराया है । जब तक एक दूसरे के साथ ऐसे संघर्ष करते रहेंगे तब तक समाज में अशांति ही रहेगी ऐसा वे बताना चाहते हैं ।

'रक्तचंदन' एकांकी में पाकिस्तान द्वारा हिंदुस्तानी सरहद्द में घुसखोरी करके सरहद्द के नजदीक रहनेवाले हिंदुओं की हत्या करते हैं । राधाकृष्ण भी अपने बेटी की इज्जत बचाने के लिए उसे खुद जहर देता है । वर्तमान परिस्थिति में धर्म के नाम पर कश्मीर घाटी में नवयुवकों को आतंकवादी बनाकर संघर्ष कर रहा है । वहाँ धार्मिक भावना को भड़काकर लोगों का खुले आम कत्ल किया जा रहा है । इसी कारण छोटे - छोटे गाँव में लोग बेसहारा हो रहे हैं । इस समस्या के कारण समाज के सामने शरणार्थियों का प्रश्न उपस्थित हो गया है ।

'मैं भी मानव हूँ' एकांकी में भी इसकी चर्चा है । सम्राट अशोक बौद्ध धर्म के विरोधी है । कलिंग राजकुमार बौद्ध है । सम्राट अशोक की विश्व पर विजयी पताका देखने की चाह के कारण वह कलिंग स्वराज्य पर आक्रमण करता है । कलिंग का सर्वनाश सैनिको द्वारा कर देता है । राजकुमार को बंदी बना कर अपना दास बनाना चाहता है । स्वाभिमानी कुमार, मौत को गले लगाकर बौद्ध धर्म को पराजित होते हुए बचा लेते हैं । सम्राट अशोक का स्वामित्व कुमार स्वीकार नहीं करते । उनके मौत पर बौद्ध भिक्षु उपगुप्त कहते है, ''ठीक कह रहा हूँ । उसने मेरा मार्ग प्रशस्त कर दिया है । उसके बलिदान की नींव पर मनुष्यता जागेगी । अशोक अपने को पहचानेगा, महानाश जितना पूर्ण होता है, निर्माण भी उतना ही दृढ़ होता है ।'' [20] सम्राट अशोक अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए मित्र राष्ट्र कलिंग का सर्वनाश कर देते हैं । धर्म श्रेष्ठत्व सिद्ध करनेवाला कुमार अपनी आहुति देता है ।

धर्म के नाम पर ही कलिंग का युद्ध खेला जाता है । धर्म को समय-समय पर प्रतिष्ठित मानकर मनुष्य ने अपना सर्वनाश किया है । प्राचीन काल से यह इतिहास है कि धर्म में अनेक बार संघर्ष हुआ है। हिंदुस्तान में इस संघर्ष के कारण अनेक महासत्ताओं का उदय और अंत हुआ है ।

'वापसी' एकांकी में लेखक ने सन् 1965 के सितम्बर की घटना को कथा का आधार बनाया है । असगर और उनके पिता हिंदुस्तान बटवारे के कारण पाकिस्तान में चले जाते है । असगर को भारतीय होने के कारण वापस भारत भेज दिया जाता है । क्योंकि भारत में आकर वह आतंक फैला दे । यही प्रयत्न रहा है । पाकिस्तान में नवयुवकों को धर्म के नाम पर संघर्ष के लिए भड़काया जा रहा है । और असगर भी उनकी साजिश का शिकार हो जाता है । पाकिस्तान दहशतवादियों को धर्म और मजहब के नाम पर मदद कर रहा है । हिंदुस्तान में हिंदू धर्म को परास्त करना उनका उद्देश्य है । वे सफल होंगे या नहीं यह काल ही बतायेगा । परंतु इस संघर्ष द्वारा अनेक संसार उजाड़ रहे हैं । अनेक नव्युवतियाँ विधवा हो रही है । अनेक बेगुनाह को मौत के घाट उतारा जा रहा है । इस चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते है ।

'सब में एक प्राण' एकांकी में यह संघर्ष हिंदू धर्म के अन्तर्गत दिखाई देता है । होटल मालिक गाँव के धार्मिक पंड़ित और ठाकुर के साथ धार्मिक विवाद करता है । गाँव के शुद्र लोगों को लेकर विवाद होता है । उनके अधिकार के लिए गाँववालों के साथ शत्रुता मोल लेता है । सब गाँववाले होटल को तोड़ने की कोशिश करते हैं तब वह कहता है - "जिस धर्म में गंगा के पानी से अपवित्र वस्तु या मानव शुद्ध हो जाता है । उसे इन शुद्रों पर झिड़काने से या गंगा के पानी से स्नान करा देने से वे क्यो नहीं शुद्ध होते ?" [21] इससे समाज में परस्पर दूरी कम नहीं हो रही है बल्कि अधिक बढ़ रही है। एकांकीकार ने इस चित्रण द्वारा एक ही समाज में धर्म को श्रेष्ठ बनाने के लिए लोग क्या - क्या करते है यह दिखाया है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि इस समस्या के कारण हिंदुस्तान में आज भी अशांति है । एकता का अभाव संगठन की कमजोरियों का दर्शन हो रहा है । भविष्य में इस समस्या द्वारा राज्य विभाजन के मुद्दे को भी उठाया जा सकता है । इसलिए समाज का कर्तव्य बनता है कि

अपने बच्चों को इस समस्या से दूर रखे और धर्म को देखने की दृष्टि बदल दे । धर्म को वैज्ञानिकता की दृष्टि से देखना चाहिए तब यह समस्या कम हो सकती है ।

5.5 धार्मिक कठोरताओं की समस्या -

धर्म को अधिक ऊँचा समझने से यह समस्या निर्माण हो रही है । जिस भगवान ने इस सृष्टि का निर्माण किया, उस भगवान को ही मानव ने धार्मिक बंधनों में जखड़ रखा है । समाज प्रबोधन करनेवाले महात्मा को भी इस बन्धन में बांधकर उनके कार्य को मर्यादित कर देने का काम हमने किया है । इसलिए वर्तमान समाज में यह समस्या अधिक बढ़ रही है । धर्म को श्रेष्ठ बनाने के कारण इसमें कठोरता आ गई है । इसलिए शादी में नये रिश्ते बनाते समय इस समस्या को अग्रक्रम मिल रहा है । अज्ञानी लोगों में इस समस्या का प्रभाव ज्यादातर दिखाई देता है । प्रभाकरजी ने इस समस्या की चर्चा निम्नलिखित एकांकियों में की है ।

'समन्दर' एकांकी में सिक्ख परिवार की करूण कहानी है । सांप्रदायिक दंगे में सिक्ख परिवार पर आक्रमण हो जाता है । इसमें अजित कौर की बेटी कीर्ति पर हिंदू युवक बलात्कार करते हैं । साथ में अजित कौर के पति और बेटे की हत्या होती है । माँ-बेटी दोनों अनाथ हो जाती है । दोनों शांतिनिकेतन में रहती है । शान्तिनिकेतन की प्रमुख कीर्ति के शादी के बारे में उसके माँ से सलाह देती है । वह शान्तिनिकेतन में रहनेवाले अनाथ अकबर के साथ शादी करने के लिये कहती है । तब कीर्ति की माँ इन्कार करते हुए कहती है -"क्या ? (सहसा तीव्र होकर) अकबर ! वह तो मुसलमान है, उससे शादी करूंगी मैं अपनी बेटी की । नहीं, नहीं होगा यह कैसे हो सकता है ।" [22] यहाँ प्रश्न धर्म का आ जाता है । माँ अजित और कीर्ति का विवाहित जीवन देखना नहीं चाहती है । वह सिर्फ धर्म के अन्तर्गत कठोर बन्धन को स्वीकार करती है । प्रश्न यह भी है, कि बलात्कार करनेवाले हिंदू नवयुवक थे । उन्होंने यह नहीं देखा कि यह अपने धर्म की लड़की है । तो कीर्ति की माँ ही धर्म का सहारा लेकर कीर्ति के फलते जीवन को बिघाड़ देती हैं । समाज चाहे कौनसा भी हो बलात्कार पीड़ित कीर्ति

को स्वीकार करेगा । अकबर अनाथ है, वह उसे स्वीकारना चाहता है । लेकिन कीर्ति की माँ धार्मिक बंधन को अपनाती हुई इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है ।

'धनिया' एकांकी में धर्मिक कठोरता की समस्या आ गयी है । होरी की गाय अचानक मर जाती है । होरी की पत्नी धनिया पर आरोप लगाती है । उसका कहना है कि होरी का भाई होरी उनके संसार पर जलता हैं । गाँव के प्रमुख धर्म के पण्ड़ित दातादीन न्याय करने बैठते है । वे कहते है - "यह बात साबित हो गयी तो हत्या लगेगी । पुलिस कुछ करे या न करे, कर्म तो बिना दण्ड़ दिये न रहेगा । रूपिया, जा तो हीरा के पास । कहना, पण्ड़ित दादा बुला रहे है । अगर उसने हत्या नहीं की तो गंगाजली उठा ले, और चौरे पर चलकर कसम खाये ।" [23] गाँव के सभी हिंदू गाय को देवता मानते है । गाय को किसने मारा, यह मालूम नहीं है । लेकिन धर्म के कारण हीरा को गंगाजली उठाकर कसम खानी पड़ेगी । गाँव में आज भी धर्म को अधिक महत्त्व देकर बिना किये गये पापो की सजा भूगतनी पड़ रही है । इन कठोरता के कारण अधिक तर गरीब पर ही अन्याय हो रहा है । प्रभाकर जी ने गाँव में देखे धार्मिक संघर्ष और उसके कारणों की मीमांसा बहुत सुंदर ढंग से दर्शकों के सामने लायी है ।

'कुम्हार की बेटी' इस एकांकी में धार्मिक कठोरताओं की समस्या आ गयी है । आचारी और अवधानी हिंदू धर्म के कट्टरपंथी हैं । उनका आरोप है कि केसना नामक कुम्हार जाति के व्यक्ति ने 'वीर शैव' धर्म का प्रचार शुरू किया है । और नीचे जाति के लोगों को भड़काकर लुटमार शुरू करवायी है । आचारी और अवधानी इस अपराध में केसानी को दण्ड़ देते है । केसानी का घर, खेती निलाम कर देते हैं । उसकी बेटी भोल्ला को चार दिन में शादी करवाने के लिये आदेश देते हैं । तब भोल्ला गाँव छोड़कर चला जाता है । और केसना को गाँव से निकाल दिया जाता है । धार्मिक कठोरता के कारण केसना को न किए कर्म का दण्ड़ भुगतना पड़ता है । आचारी केसना की लड़की के बारे में अवधानी से पुछते है । तब वे कहते है - "अरे आप चिंता क्यों करते है ? धर्म की सदा जय होती है । वह पापिन थी, भाग गयी । अब आप आराम से सोईये । आइये देवदासी का गाना सुना जाए । लो, वह बाहर ही आ रही हैं ।" [24]

तात्पर्य यह की धर्म के अंतर्गत निर्माण हो रहे नये-नये पंत को वे लोग मुक्त से स्वीकार नहीं करते । अपने धर्म को श्रेष्ठ मानकर दूसरों पर अत्याचार करते हैं । वर्तमान समाज में इस तरह की अनेक घटनाएँ हो रही है । इसलिए मनुष्य का जीवन अशांत बन गया है । आचार्य और अवधानि जैसे लोग इस समस्या का पालन करके समाज में अशांति फैला रहे है ।

'युगे-युगे क्रांति' में धार्मिक कठोरता के प्रति नायक के द्वारा विद्रोह किया है । शारदा के पिता प्यारेलाल धर्म के विरोध में जाकर विधवा के साथ विवाह करना चाहते है। प्यारेलाल के पिता कल्याणसिंह और माता रामकली उसे समझाते है । वह कोई बात सुनता नहीं तब पिता खुब मारते हैं । रामकली रोती हुई अपने पुत्र से कहती है - "(रोकर) यह सब क्या हो रहा है । मेरे बच्चे, तु समझता क्यों नहीं । तुझे अपने खानदान की बात सोचनी चाहिए । धर्म की बात सोचनी चाहिए । जो हमारे पूरखे लिख गये है, वह गलत कैसे हो सकता है ? (अपनी पति से) अजी, तुम इसे अच्छी तरह समझाओ । गुरूजी के पास भेजो, मारो मत, देखो क्या बुरा हाल कर दिया बेचारे का । तुम पर भी जब खून सवार होता है तो बस ...।" [25] धार्मिक कठोरता के कारण प्यारेलाल की शादी माँ - बाप रूकवा देते है । एकांकीकार कहना चाहते है कि बच्चे जब नया आदर्श निर्माण करना चाहते है तब माँ - बाप इसका विरोध करते हैं।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि धार्मिक कठोरता के कारण हमने दूसरे धर्म और जात को देखने की दृष्टि को मर्यादित बनाया है । जब हम शिक्षित होंगे तब समाज में बदल हो सकता हैं । अनुसंधान द्वारा विज्ञान के तत्त्व पर इसको परख कर हम अपना मत व्यक्त कर देगें तब इसके प्रति देखने में नयापन आ जायेगा । व्यक्ति ने शिक्षा के साथ वैज्ञानिक दृष्टि को भी अपनाना चाहिए । तब यह समस्या कम हो सकती है ।

5.6 अंधविश्वास की समस्या -

भारतीय समाज में अंधविश्वास अधिक दिखाई देता है । इस समस्या ने सांप्रदायिक दंगे फसाद को जन्म दिया है । प्रत्येक समाज में अलग-अलग पद्धतियाँ निर्माण हो गई है । वर्तमान समाज में हर

दिन अंधविश्वास से पीड़ित लोग मर रहे हैं । इसके कारण अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे हैं । उदाहरण के तौर पर विधवा को समाज से बहिष्कृत किया गया है । निम्न जाति के लोगों का दर्शन आज भी अशुभ माना जा रहा है । शहर से अधिक गाँव में यह समस्या अधिक दिखाई दे रही है ।

'ऊँचा पर्वत गहरा सागर' इस एकांकी में सभी पात्र चेरियन, जयमा, पारसिंह, मोहनलाल, मीरा, शेफाली, गोखले, युद्धवीरसिंह, आनंद अंधविश्वास पर विश्वास पात्र है । इन सारे पात्रों की समझ है कि गंगोत्री पर्वत पर पहुँचने से जीवन का दुःख कम हो जायेगा । अंधविश्वास के कारण मोहनलाल अपनी बेटी मीरा के साथ बर्फीले प्रदेश में गंगोत्री पर्वत पर सैर करने चला आता है । पर पुण्य यात्रा में मोहनलाल पाँव फिसलकर चोटी से गिर जाता है । वही उसकी मृत्यु हो जाती है । मोहनलाल की विधवा बेटी मीरा भी अंधविश्वासु है । पति मरने के बाद से अपने आप को अभागिन समझती है । जब जयमा गुजराती महीला की सुश्रृषा करने के लिए आनंद स्वामी कहते है । तब वह कहती है - "नहीं , मैं उनके सामने नहीं जा सकती । मै अभागिन हूँ । सब को खा गयी । उन्हे भी खा जाऊँगी । मुझे लौट जाने दो ।" [26] अधिकतर भारतीय समाज अंधश्रद्धा, रूढ़ि, परंपरा में विश्वास रखनेवाला है । मीरा भी इस समाज की शिकार बन गयी है । इसलिए उसकी मानसिक स्थिति कमजोर बनाई गयी है । अपने पति के मृत्यु का कारण वह खुद को समझती है । इसी कारण वह अपने आप को अभागिन समझती है ।

'स्वर्ग और संसार' एकांकी में मंजु हिमालय की चोटी पर सौंदर्य देखने अपने साथी के साथ चली जाती है । आँधी और बर्फ में वह रास्ता भूल जाती है । सूर्यास्त होने के कारण वातावरण अंधकारमय हो जाता है । तब वह मदद के लिए पुकारती है । उसी समय हिमालय की चोटी पर उसके नजदीक ही दो पुजारी दिखाई देते है । शामसिंह और अमरसिंह भगवान की पूजा के लिए फूल तोड़ रहे है । वे मंजु की आवाज सुनते है, लेकिन पुजा के फुल जमीन रखना पाप समझकर मदद नहीं करते है । शामसिंह अपने साथी से कहता है- "नहीं । मैं नहीं जा सकता । मै केदारनाथ की पूजा को अपवित्र नहीं करूंगा ।" [27] प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते है की मनुष्य अंधविश्वास के कारण मदद करना भी पाप समझ रहा है । मदद करना वर्तमान स्थिति में पाप हो सकता है ? तब दोनों को उपदेश देती है । वह कहती है - "क्या मनुष्य की

सहायता करना भगवान की पूजा को अपवित्र करना है ? नहीं , नहीं यह सब उन लोगों का अज्ञान है । निरी मुर्खता है, जड़ता है ।'' [28] आज हम मनुष्य को मदद नहीं कर है । लेकिन मनुष्य ने बनायी गई पत्थर की मूरत के लिए जान दे रहे हैं । वर्तमान समाज में इस तरह का चित्रण सर्वत्र दिखाई दे रहा है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि अंधविश्वास के कारण हम लोग एक दूसरे को मदद करना भूल रहे है । एक दूसरे को मदद करना ही भगवान की पूजा है । अज्ञान के कारण हम अपने आप को पहचान ने में गलती कर रहे है । किसी भी पुण्य यात्रा द्वारा पुण्य कमाया नहीं जा सकता है । दीन, गरीब, अनाथों को मदद द्वारा ही पुण्य मिल सकता है । जब तक भारतीय समाज से यह समस्या तब तक हम अपनी प्रगति नही करेंगे ।

निष्कर्ष -

धार्मिक संघर्ष भविष्य में समाज के लिए घातक रहा है । और वर्तमान में भी यह घातक है । इस संघर्ष द्वारा भविष्य में धर्म के नाम पर विभाजन होने की ज्यादा संभावना है । धार्मिक कठोरता यह भी एक मानवीय प्रवृत्ति है । समाज में लोग शिक्षित होंगे तब इसमें बदल हो सकता है । नहीं तो इस समस्या द्वारा जात-धर्म का प्रभाव अधिक रहेगा । तीर्थाटन के लिए हजारो रूपये खर्च कर देंगे, लेकिन किसी गरीब को मदद नहीं कर देंगे । पुण्य कमाने की लालसा से हम भगवान ने बनाये गया मनुष्य को मदद नहीं करेंगे । लेकिन मनुष्य द्वारा बनायी गए मूर्ति पर हजारो रूपये चढ़ाते है । जब तक हम यह सब रोक नहीं लेंगे तब तक यह समस्या बढ़ती रहेगी ।

एकांकीकार ने सामाजिक और राजनीतिक समस्या के अंतर्गत अनेक समस्या की चर्चा की है । लेकिन धार्मिक और आर्थिक समस्या की चर्चा उनकी एकांकियों में कम मिलती है । भविष्य में एकांकीकार को इसकी ओर देखना जरूरी है । क्योंकि समाज प्रबोधन करना आद्य कर्तव्य है ।

संदर्भ -

1. जवाहरलाल नेहरू, डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृ. 335
2. द्रष्टव्य Marks : Quoted from recent Political Thought of P. W. Cokoor, पृ. 52-53
3. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 1, मीना कहाँ है ?, पृ. 294
4. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 1, माता - पिता, पृ. 386
5. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, सूली पर टँगा श्वेत कमल, पृ. 186
6. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, और वह जा न सकी, पृ. 383
7. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, हरिलक्ष्मी, पृ. 284
8. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, श्वेत अंधकार, पृ. 403 - 404
9. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, धनिया, पृ. 119
10. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 2, आँचल और आँसू, पृ. 335
11. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 2, संस्कार और भावना, पृ. 406
12. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 2, टूटते परिवेश, पृ. 28
13. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 2, कितना गहरा कितना सतही, पृ. 14
14. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, मुरब्बी, पृ. 154
15. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, धनिया, पृ. 132
16. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, धनिया, पृ. 133
17. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, हरिलक्ष्मी, पृ. 279
18. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, श्वेत अंधकार, पृ. 407
19. डा. रामधारिसिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 611
20. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 1, पूर्णाहूति, पृ. 281
21. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 1, सब में एक प्राण, पृ. 354

22. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 1, समन्दर, पृ. 411
23. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, धनिया, पृ. 137
24. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 3, कुम्हार की बेटी, पृ. 46
25. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 1, युगे युगे क्रान्ति, पृ. 174 - 175
26. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 2, ऊँचा पर्वत गहरा सागर, पृ. 322
27. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 2, स्वर्ग और संसार, पृ. 391
28. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक - 2, स्वर्ग और संसार, पृ. 391

उपसंहार -

''विष्णु प्रभाकर के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ का अनुशीलन'' - प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में एकांकीकार की पचास एकांकियों का विचार किया गया है । इसमें कुछ समस्याएँ पूरानी हैं। परंतु उन्हे व्यक्त करने का और समस्याओं की ओर देखने का एकांकीकार का दृष्टिकोण आधुनिक दिखाई देता है । एकांकी नाटक के क्षेत्र में विष्णु प्रभाकर जी का कार्य सराहनीय है । इनके नाटकों की मुलवृत्ति देखने से स्पष्ट हो जाता है कि आप मानवतावादी कलाकार हैं । मानव का उत्थान, प्रगति, मार्ग की बाधाओं को दूर करना, नए आदर्श प्रस्तुत करना आदि में आपका ध्येय सफल रहा हैं । आप नई पीढ़ी के सर्वाधिक एकांकी लिखनेवाले एकांकीकार हैं । बचपन से ही संघर्षमय जीवन बीताने के कारण आपके साहित्य पर इसकी परछाई दिखाई देती है । आपने कहानी साहित्य, उपन्यास साहित्य, जीवनी वैचारिक साहित्य, बाल साहित्य, एकांकी साहित्य तथा सभी विधाओं पर लेखन किया है । आपके एकांकियों के शिल्पगत अध्ययन के बाद अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं ।

आपकी प्रायः सभी एकांकियाँ अपना निजी महत्व रखती हैं । इसकी सफलता और उच्चता इसमें है कि उनके कथानक गढ़े हुए एवं रोचक है । भावों का धरातल ऊँचा, कथोपकथन स्वाभाविक तथा चरित्र-चित्रण विशद है । विश्लेषण की सुबोधता, स्पष्टता एवं अत्याधिक स्वाभाविकता इन एकांकियों का प्रकृत गुण है । इन एकांकियों में नाटकीय कला कौशल्य का उत्कृष्ट नमूना परिलक्षित होता है । इनमें रंगमंच एवं शिल्प के विभिन्न तत्वों का कलात्मक और वैज्ञानिक समन्वय मिलता है ।

इन कृतियों की प्रमुख विशेषताएँ है कथानक, चरित्र-चित्रण, विचारसरणी, और कथोपकथन आदि में पुनरावृत्ति न होकर पर्याप्त वैविध्य है ।

साधारण मनुष्य के जीवन में आनेवाली उलझनात्मक कठिनाईयों को समस्या के नाम से अभिहित किया जाता है । निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि साहित्य द्वारा समस्या का निराकरण करने का प्रयास साहित्यकारों ने किया है । और वह अधिक सफल रहा है । प्रभाकर जी के एकांकियों में प्रमुख चार समस्याएँ दिखाई देती हैं।

1. सामाजिक समस्याएँ

2. राजनीतिक समस्याएँ

3. आर्थिक समस्याएँ

4. धार्मिक समस्याएँ

एकांकीकार ने पहली बार जीवन में एक लडकी से प्रेम किया था । प्रभाकरजी उनके साथ शादी करना चाहते थे । घरवालों ने इस शादी का बहुत विरोध किया । क्योंकि लडकी उनकी जाति की नहीं थी । इस घटना से उनके मन को धक्का पहुँचा । जैसे - जैसे वे लिखते गए उन्होंने इस उच्च-नीच जातीय व्यवस्था के विरोध में लेखन किया है । इसका सुंदर उदाहरण 'सब में एक प्राण' में दिखाई देता है । समाज के उच्च वर्गीयों के कुरितियों पर व्यंग्य करते हुए जाति-व्यवस्था नष्ट करने के लिए उपाय भी बता दिए हैं ।

उनके एकांकियों के अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज से उच्च-नीचता संविधान द्वारा बदल नहीं सकती । मानव मूल-प्रवृत्ति में बदल होने के बाद ही समाज की दृष्टि बदल सकती है । अज्ञान व्यक्तियों का दृष्टिकोण बदलने के लिए गाँव-गाँव में प्रथम शिक्षा का प्रबंध करना जरूरी है । तब समाज की दृष्टि बदल सकती है ।

काम प्रवृत्ति मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है, परंतु जब उसका अतिरेक हो जाता है । तब काम समस्या से समाज को अधिक धोखा रहता है । वर्तमान समाज में यह समस्या अधिक बढ़ाने के अनेक कारण एकांकीकार ने बता दिए हैं । घर - घर में आज टी.व्ही. चैनल का अधिक प्रसार है, छोटे-छोटे बच्चे अंग्रेजी फिल्म देख रहे हैं । उसमें खुले देह प्रदर्शन तथा लैंगिक उत्कटा बढ़ानेवाली फिल्में जादा है । आज कल फैशन की दुनिया अधिक है । इसमें देह प्रदर्शन अधिक रहा है । एकांकीकार ने 'कुपे' एकांकी में कामग्रस्त व्यक्ति का चित्रण बहुत सुंदर किया है । एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि जब तक भारतीय समाज में फैशन के नाम पर किए जानेवाला खुले देह प्रदर्शन का और लैंगिक उत्कटा बढ़ानेवाली फिल्मों पर पाबंदी लगाई नहीं जा सकती तब तक काम समस्या बढ़ती ही जाएगी ।

प्रेम समस्या के चित्रण द्वारा उन्होने प्रेम में बाधाएँ क्यों निर्माण होती हैं । इसके अनेक कारण बता दिए हैं । आज कल मनुष्य अधिक स्वार्थी बन गया है । इसलिए उसके प्रेम में धर्म, जात, स्वार्थ, शिक्षा, सौंदर्य आदि का अधिक महत्त्व दिखाई दे रहा है । परिणात: वर्तमान समाज में प्रेम समस्या बढ़ रही है । लेकिन एकांकीकारने एकांकियों में अधिकतर नि:स्वार्थ प्रेम को स्वीकार किया है ।

एकांकीकार ने परिवार-नियोजन समस्या को गंभीर रूप से देखा है । उन्होंने इस समस्या के चित्रण द्वारा भारतीय समाज की भविष्य में स्थिति कैसी होगी इसका चित्रण में किया है । परिवार बढ़ने के अनेक कारण बताए है इसमें प्रमुख रूप से अंधश्रद्धा को हटाने के लिए कहा है । क्योंकि हमारे परिवार में लडकियाँ पैदा होने से हम संतान पैदा करना बंद नही करते । और लडके की इच्छा में अनेक संतान निर्माण करने की अनुमति देते हैं । परिणाम स्वरूप हमारी आबादी बढती ही जा रही है । इसके लिए हम स्वयं जिम्मेदार है । एकांकीकार ने इस समस्याओं के चित्रण द्वारा हमें सावधानी का इशारा किया है ।

एकांकीकार ने अनाथ की समस्या का चित्रण द्वारा वर्तमान समाज में उच्चवर्ग के काम प्रवृत्ति का दर्शन कराया है । युवतियों को लालच दिखाकर उसके कौमार्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है । जब ऐसी नवयुवतीयों के पेट में बच्चा रहता है तब उन्हें जन्म के बाद अनाथालयों में छोड़ दिया जाता है । ऐसे

अनाथों के साथ समाज कैसे बुरा व्यवहार करता है । इसका चित्रण उनके एकांकियों में अधिक मिलता है । जब तक यह लोग काम प्रवृत्ति पर मर्यादा नहीं लगाऐंगे तब तक अनाथों की संख्या बढ़ती रहेगी ।

एकांकीकार ने अनमेल विवाह समस्या का चित्रण सुंदर ढंग से किया है । गरीब परिवार में लड़की की शादी करा देना कठिन प्रश्न है । क्योंकि वर्तमान समाज पद्धति ऐसी है कि शादी में दहेज, लेना - देना प्रतिष्ठित माना जाता है । गरीब और निम्न वर्ग में इस पद्धति के कारण अनमेल विवाह अधिक हो रहे हैं । एकांकीकार ने ग्रामीण तथा महानगरों में भी यह समस्या देखी है उनका कहना है कि महानगरों में यह समस्या उच्चवर्गीय लड़के - लडकियों में जायदाद के आकर्षक के कारण दिखाई दे रही है ।

फलतः निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि अनमेल विवाह के कारण ही नारी को वैधव्य का अनचाहा उपहार मिल रहा है ।

समाज में अवैध संतान की समस्या बढ़ रही है । इसके पीछे मनुष्य की काम प्रवृत्ति है । परंतु समाज का ऐसे संतान के प्रति व्यवहार कैसा रहा है । इसका चित्रण एकांकीकार ने एकांकियों में किया है । उनका कहना हैं कि समाज ऐसी संतान को नफरत से देखता है । उसे कीमत नहीं दी जाती है । परिणाम स्वरूप ऐसे बच्चे चोर, डाकू, लूटेरे, गुन्हेगार बन रहे है । इसके लिए पूर्णतः हम जिम्मेदार है । उनके 'डरे हुए लोग ' एकांकीका में इसका चित्रण मिलता है । 'तापस' को ऐसी ही संतान समाज के लोग मानते है । ऐसे बच्चे के साथ स्कूल के बच्चे, मास्टर, मौहले के लोग, अच्छा बर्ताव नहीं करते । अंत में तापस अपना घर छोड़कर चला जाता है ।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि समाज ऐसे संतान से अच्छा बर्ताव करे क्योंकि यही बच्चे कल के नागरिक है ।

एकांकीकार जब शहर में रहेने आ गए तब फैशन का जमाना आ गया था । लोग फैशन के नाम पर अपने घर-बार में परिवर्तन कर रहे थे । अनेक परिवारों में इस समस्या के कारण तनाव निर्माण हो रहे थे । कई-कई पति -पत्नी में तलाक तक बात पहुँच चूकी थी । तब भावनात्मक एकांकीकार इस समस्या से दूर कैसे रह

सकते थे । उन्होंने इस समस्या का चित्रण उनकी 'लिपस्टिक की मुस्कान', 'मर्सिडीज और ढोलक' एकांकी में सुंदर किया है । रिता शादी शुदा औरत है । वह फैशन में जीना चाहती है । वह बिना मेकअप के बातचीत भी नहीं करती । बच्चा मेकअप और कपडे गंधे करता है इसलिए उसे शिशुघर छोड़ आती है । वह अपने पति राकेश से सिगरेट पीने के लिए कहती है । जब वह ना करता है तब स्वयं सिगरेट शराब पीना शुरू कर देती है । अंत में पति फैशन से तंग आकर उसे छोड़ देता है ।

प्रस्तुत समस्या के चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते है कि इस समस्याने हमारी संस्कृति को पाँव - तले कुचल दिया है । फैशन के द्वारा आपका शरीर सुंदर बन सकता है, आत्मा नहीं ।

एकांकीकार ने दिल्ली में रहना शुरू किया तब से शहर में इस समस्या को नजदिक से देखा है। उनके मित्र परिवार तथा पढ़े लिखे युवा पीढ़ी में उन्होंने इस समस्या का सूक्ष्म निरीक्षण किया है । इसलिए उन्होंने स्वच्छंदी जीवन पद्धति समस्या का चित्रण बहुत प्रभावी किया है । इस समस्या द्वारा संयुक्त परिवार पद्धति में कैसी बाधाएँ निर्माण हो रही है । इसका चित्रण है । युवक-युवती द्वारा घर छोड़ने से घर में प्रेम, ममता का अभाव दिखाई दे रहा है । अनेक युवक-युवतियाँ घर को भूलाने और अपना गम भूलाने के लिए ब्राऊन शुगर, चरस, गांजा का सेवन कर रही है । आपसी शारीरिक संबंध बनाए रखने के कारण महा भयंकर रोग का शिकार हो रही है । प्रस्तुत समस्या के चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि अपने बच्चों से बचपन से ही अच्छी शिक्षा और संयुक्त परिवार का लाभ बता दे कि बड़े होकर वे घर छोड़कर चले न जाए ।

वर्तमान समाज में जिसका प्रमाण अधिक है ऐसी विधवा समस्या का चित्रण उन्होंने एकांकियों में प्रभावी ढंग से किया है । उनका कहना है कि भारतीय समाज में विधवा के साथ हमदर्दी दिखाकर उसका छुपा उपभोग अपनी तृप्ति के लिए किया जाता है । लेकिन कोई भी व्यक्ति उसके साथ खुलेआम शादी करके रहना पसंद नहीं करता है । एकांकीकार ने इसका उदाहरण 'कुपे' एकांकी में दिया है । सांत्वना विधवा प्राध्यापिका है । विनोद उसके साथ शारीरिक संबंध रखता है । लेकिन शादी उसे दूसरी लडकी से करनी पड़ती है ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं कि जिस तरह प्राचीन काल में विधवा को बदनाम किया जाता था । उसी तरह वर्तमान स्थिति में भी बदलाव नहीं आया है ।

इसी तरह एकांकीकार ने तलाक समस्या, कुँवारीमाता समस्या, दहेज समस्या, भ्रष्टाचार समस्या, मनोरूग्ण की समस्या आदि सामाजिक समस्याओं का चित्रण प्रभावी ढंग से किया है । इससे यह कहा जा सकता है कि एकांकीकार भारतीय समाज से जुड़े हुए सक्षम व्यक्ति है । इसलिए उन्होंने अपनी एकांकियों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण अधिक किया है ।

प्रभाकर राजनीतिक आंदोलन में सक्रीय कार्य करते रहे है । गांधीजी के साथ और गांधी के बाद उनका संबंध राजनीति से रहा है । अंतः राजनीतिक एकांकीका लिखना उनकी रूचि के अनुकुल है । इस संबंध में 'हमारा स्वाधिनता संग्राम', 'लाल किला', 'झाँसी की रानी', 'प्रतिशोध', 'देवताओं की घाटी', 'बीमार', एकांकीका में चित्रण मिलता है । इसमें लगभग डेढ़ सौ वर्ष से स्वाधीनता संग्राम के लंबे इतिहास की मुख्य - मुख्य घटनाएँ जैसे सन् 1857 का बंड़, जालियनवाला बाग, असहयोग आंदोलन, स्वातंत्रता की घोषना, सन् 15 अगस्त 1947 की स्वातंत्रता की प्राप्ति आदि आ गई है । लेकिन वर्तमान परिस्थिति में महत्वपूर्ण समस्याओं का चित्रण भी किया है । जैसे परकीय आक्रमण समस्या, देश विभाजन, न्याय समस्या, दल बदलू नेता, रिश्वत समस्या, स्वार्थी नेता आदि का चित्रण भी किया है ।

प्राचीन काल से परकीय सत्ताने हिंदुस्तान पर राज्य किया है । इसलिए इस देश में धार्मिक सामाजिक, धार्मिक, राजकीय बदलाव हो गए है । इसका चित्रण परकीय आक्रमण की समस्याओं में किया है । एकांकीकार का कहना है कि हिदुस्तान पर परकीयों का आक्रमण आज तक हो रहा है । आज तक पाकिस्तान ने तीन बार खुला आक्रमण किया है । छुपा आक्रमण तो वर्तमान स्थिति में शुरू है । चीन ने दो बार हमला किया है । इस कारण भारत की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गयी है । पाकिस्तान के छुपे आक्रमण ने धर्म को अधिक महत्व दिया है ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा वे यह कहना चाहते हैं कि वर्तमान परस्थिति में परकीय आक्रमण का धोका अधिक है । इसलिए भारत को अपना शांति का मार्ग कभी छोड़ना नहीं चाहिए । पडोसी देशों से अच्छे संबंध प्रस्तापित करने चाहिए इससे विश्वपरिषद में हिंदुस्तान की शान अधिक बढ़ेगी ।

एकांकीकार ने देश विभाजन की समस्या का चित्रण भी किया है । वर्तमान समस्याओं में देश को सबसे बड़ा धोखा विभाजन का है । हिंदुस्थान काा विभाजन तत्कालीन नेताओं की गलतियाँ थी । लेकिन यही गलतियाँ आज पुनर्निर्मित होने की संभावना है । आज कश्मीर और पंजाब विभाजन इसके उदाहरण है । और यह हिंदुस्थान की एकता के लिए हानिकारक हैं ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते है कि भविष्य में ऐसी गलतियाँ होने न देना हमारा कर्तव्य है । इसलिए स्वार्थी नेताओं से सतर्क रहना चाहीए ताकि वे स्वार्थी राजनिति में विभाजन न कर सके । भारत में संविधान द्वारा बनाया गया लोकतंत्र राज्य है, लेकिन वर्तमान परस्थिति में समाज से समान न्याय मिलना कठिन हो गया है । वर्तमान स्थिति में न्याय की समस्या का रूप गंभीर हो रहा है । इसका चित्रण उन्होंने किया है । जिसके पास धन है वे अदालत का फैसला बदलने में कामयाब हो रहे है । इसी कारण गरीब आदमी न्याय व्यवस्था से नाराज हो गए है । एकांकीकार ने 'हरिलक्ष्मी' में शिवचरण चौधरी का यथार्थवादी चित्रण किया है । वह रूपयों के जोर पर गरीब बिपिन की सारी जमीन अपने नाम करवा लेता है । अंत में अदालत भी उसी के पक्ष में न्याय देती हैं ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकारने वर्तमान परस्थिति का यथार्थवादी चित्रण प्रभावी ढंग से करके इस समस्या का गंभीर रूप प्रकट किया है ।

आज कल रूपयों के साथ-साथ बड़े नेताओं की शिफारिस को महत्व प्राप्त हो गया है । आपके पास योग्य पात्रता नहीं है । तो भी आपको नौकरी मिल रही है । समाज का उच्च वर्ग ही नेताओं तक पहुँच रहा है । गरीब नवयुवक शिफारिश न होने के कारण बेकार हो गए है । इसलिए समाज में शिफारिस की समस्या

अधिक बढ़ रही है । इसका चित्रण एकांकीकार ने 'टूटते परिवेश', 'श्वेत अंधकार' आदि एकांकियों में किया है ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार ने बेरोजगार लोगों के जीवन का दर्शन कराया है ।

स्वार्थी भावनाओं के कारण मनुष्य में संपत्ति काबिज करने की प्रवृत्ति अधिक बढ़ रही है । भाई-भाई, मित्र-मित्र, पिता-पुत्र में इसके कारण दुश्मनी बढ़ रही है । 'भोगा हुआ यथार्थ' में पारसनाथ के द्वारा एकांकीकार ने संपत्ति हड़पने करने की समस्या का चित्रण किया है । पारसनाथ संपत्ति के लालच में भाई को पागल साबित करके संपत्ति हड़प लेता है । वह अपनी पत्नी को कुएँ में धकेल कर बीमा कंपनी से पैसे वसुल करता है । इसी तरह 'तीसरा आदमी', 'दूर और पास', 'जज का फैसला', में सुंदर चित्रण किया है । मनुष्य की वर्तमान स्थिति आज ऐसी ही हैं ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि जब तक हम स्वार्थ को तिलांजली नहीं देगें तब तक ऐसे प्रश्न निर्माण होते रहेंगे ।

स्वातंत्र्यपूर्व काल में नेताओं ने अच्छा कार्य किया है । एकांकीकार ने अपने राजनीतिक आंदोलन में यह देखा है । यही नेता लोग आजादी के लिए जेल गए है । स्वातंत्र्य के बाद नेताओं ने स्वार्थ के कारण दल बदलना शुरू किया । यह सब उन्होंने नजदिक से देखा है । इसलिए दल बदलू नेता की समस्या का चित्रण उनकी एकांकियों में आना स्वाभाविक है । उनका कहना हैं कि नेताओं ने दल बदल शुरू करने से भारतीय राजनीति में अस्थीरता पैदा हो गयी है । सरकार अस्थीर होने के कारण लोक कल्याण कार्य का अभाव निर्माण हो रहा है । ऐसे नेताओं पर कानूनी पाबंदी लगानी चाहीए । और उसे समाज से बहिष्कृत करना चाहिए । तब दल बदलने की प्रवृत्ति पर रोक लगी सकती है ।

भारत के सामने शरणार्थियों की समस्या कम नहीं है । वह अधिक बढ़ रही है । कश्मीर घाटी से, चीन से आज शरणार्थी आ रहे है । आज कल अनेक राज्य में धर्म के नाम पर किए जानेवाला हत्याकांड़ के भय से लोग स्थलांतर कर रहे है । हाल में चीन से कर्मापा लामा का और चीनीओं का आगमन है । श्रीलंका से

शरणार्थियों का आगमन है । इसलिए भारत सरकार को विचारपूर्वक निर्णय लेना चाहिए । एकांकीकार ने प्रस्तुत समस्या के चित्रण द्वारा भारतीय सरकार को आगह किया है कि यह समस्या अब खत्म नहीं हुई है बल्कि अधिक बढ़ रही है ।

इसी तरह एकांकीकार ने 'सता का दूरूपयोग' नेताओं का शोषण, रिश्वत समस्या, लोकतंत्र की समस्या, आदि राजनीतिक समस्याओं से संबंधित समस्याओं का चित्रण उनकी एकांकियों का में अधिक सुंदर किया है ।

एकांकीकार ने आर्थिक समस्याओं का चित्रण भी किया है । वर्तमान समाज में मनुष्य की कीमत धन पर की जा रही है । जिसके पास अधिक धन है । उसे ही समाज में मान-सम्मान मिल रहा है । गरीब आदमी को हीन दृष्टि से देखा जा रहा है । गरीबी अधिकतर निम्नवर्ग में दिखाई देती है । इसके कई कारण भी बता दिए है ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि जनता एक - दूसरे को सहकार्य करे गरीबी कम करने का प्रयत्न करे । सरकार द्वारा कई जनकल्याण योजनाओं द्वारा उपाय करके गरीबी कम करने का प्रयत्न करना चाहिए । उनकी एकांकियों में बेकारी के चित्रण द्वारा वे कहना चाहते है कि हर वर्ष लाखों छात्र विश्वविद्यालय से उपधियाँ लेकर घूम रहे हैं । लेकिन नौकरी मिलना मुश्कील हो गया है । इसलिए यह छात्र गलत रास्ता अपना रहे हैं । तो कई छात्र आत्महत्या का मार्ग स्वीकार कर रहे हैं । वर्तमान समाज में यह बहुत गंभीर समस्या है ।

प्रस्तुत समस्या का कारण उन्होंने शिक्षा प्रणाली का दोष बताया है । साथ ही कई उपाय बता दिए है । उनका कहना है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा, टेक्नीकल शिक्षा और संगणक शिक्षा का प्रबंध करना जरूरी है ।

भारतीय समाज में किसान और मजदूरों की संख्या अधिक है । वे अनपढ़ और अज्ञानी है । इनकी आर्थिक स्थिति भी खराब रहती है । अनपढ़ होने के कारण बैंक से ऋण नहीं लेते । साहूकार से कर्जा लेते

है । ऐसी स्थिति में समाज में ऋण की समस्या बढ़ रही है । इसका सुंदर चित्रण एकांकीकारने 'धनिया', 'मुरब्बी', 'श्वेत अंधकार' में किया है ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि किसान और मजदूरों की स्थिति बुरी है । साहुकार उन्हें बेइज्जत करते है । ऐसे साहूकार को सरकार द्वारा साहूकारी पर कानूनी पाबंदी लगानी चाहिए । तब और सरकार द्वारा तत्पर कर्जा देने की सुविधा होनी चाहिए । तब यह समस्या कम होगी । इसी तरह उनकी एकांकी में धार्मिक समस्या कम मिलती है, फिर भी वह प्रभावी है । पहले - पहले एकांकीकार अंधविश्वासू थे । लेकिन बाद में उनकी धर्म के प्रति देखने की दृष्टि बदल गयी । सन् 1947 के पूर्व और बाद में धर्म के नाम पर निर्माण होनेवाली समस्या का चित्रण उनकी एकांकियों में मिलता है ।

वर्तमान समाज में कई - कई लोग धर्म को अधिक महत्त्व देकर अनेक प्रश्न निर्माण कर रहे हैं । उदा. हिंदू - मुस्लीम दंगाफसाद, ख्रिश्चनों की हत्या आदि । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार ने कहा हैं कि जब तक हम धर्म को वैज्ञानिक दृष्टि से नहीं देखते तब तक मनुष्य एक दूसरे के धर्म को श्रेष्ठ बनाने के लिए आतंक फैलाता रहेगा । साथ ही अंधविश्वास और कुरुढ़ियों को बढ़ावा देता रहेगा । इसलिए भारतीय समाज में वैज्ञानिकता को बढ़ावा देने का काम करना चाहिए ।

उपलब्धियाँ -

1. संविधान द्वारा उच्च - नीचता बदल नहीं सकती बल्कि मानवी प्रवृत्ति शिक्षा द्वारा ही बदली जा सकती हैं ।

2. वर्तमान काल में परिवार नियोजन की समस्या प्राचीन काल की अपेक्षा अधिक गंभीर हैं ।

3. काम समस्या की जड़ फैशन है । फिल्म के नाम पर किए जानेवाला देह - प्रदर्शन और काम प्रवृत्ति पर बढ़ावा देनेवाली फिल्मों पर पाबंदी लगानी चाहिए ।

4. अनमेल विवाह निम्नवर्ग में अधिक हो रहे हैं । परंतु उच्चवर्ग में फैशन के नाम पर उसका प्रमाण बढ़ता जा रहा है ।

5. स्वच्छंदी जीवन समस्या, पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण युवक - युवतियों में अधिक बढ़ रहा है । इसी कारण महाभयंकर बीमारियाँ निर्माण हो रही है ।

6. वर्तमान काल में विधवा की स्थिति प्राचीन काल की अपेक्षा हीन - दीन है ।

7. परकीय आक्रमण का धोखा भविष्य में पड़ोसी राष्ट्रों से अधिक हैं ।

8. देश विभाजन नेताओं की गलतियाँ थी लेकिन भविष्य में राज्य विभाजन का धोखा अधिक बढ़ गया हैं ।

9. सिफारिश द्वारा अपात्र व्यक्ति के नियुक्ति से, समाज का अहित अधिक हो रहा हैं ।

10. दल बदलू नेताओं पर कानूनी पाबंदी लगाकर समाज से बहिष्कृत करना चाहिए ।

11. आदर्श लोकशाही निमार्ण के लिए सरकार और जनता और नेताओं का सरकर को अपेक्षीत सहयोग देना चाहिए ।

12. निम्न वर्गों में गरीबी का प्रमाण अधिक दिखाई देता है ।

13. नई - नई शिक्षा प्रणाली व्यावसायिक के अनुकूल बनाकर बेकारी कम की जा सकती है ।

14. धर्म को वैज्ञानिक परिपप्रेक्ष में देखने पर अंधश्रद्धा और धर्मांधता कम हो सकती है ।

15. विष्णु प्रभाकरजी को समस्या मूलक एकांकीकार कहना ही उचित है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ -

कोई भी अनुसंधान पूरी तरह अंतिम रूप नहीं प्राप्त कर सकता है । विष्णु प्रभाकर के एकाकियों पर निम्न विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है ।

1. 'विष्णु प्रभाकर के एकांकियों का शिल्पगत अध्ययन '

2. 'विष्णु प्रभाकर के एकांकियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन '

3. 'विष्णु प्रभाकर के एकांकियों का नाट्य साहित्य में योगदान ।'

4. . ' विष्णु प्रभाकर के एकांकियों में अभिनेयता तथा रंगमंचता ।'